आचार्य बुद्धघोस

कृत

परमत्थजोतिका

सुत्तनिपात-अट्ठकथा

भाग - १

हिंदी अनुवाद

अनुवादक

प्रो. अंगराज चौधरी

विपश्यना विशोधन विन्यास

आचार्य बुद्धघोस

कृत

परमत्थजोतिका

सुत्तनिपात-अट्ठकथा

भाग - 1

हिंदी अनुवाद

अनुवादक

प्रो. अंगराज चौधरी

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी

H102 - सुत्तनिपात-अट्ठकथा भाग - 1 (सजिल्द)

© विपश्यना सर्वाधिकार सुरक्षित
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण: जनवरी 2019

मूल्य: रु. 450.00

ISBN 978-81-7414-425-6 (Hardbound)

प्रकाशक:
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403
जिला - नाशिक महाराष्ट्र
फोन: 02553-244998, 244076,
244086, 244144, 244440;
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रक:
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
जी-259, सीकॉफ लमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी.,
सातपुर, नाशिक-422007, महाराष्ट्र

सुत्तनिपात अट्ठकथा भाग - 1

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय ६

भूमिका ७

ग्रंथारम्भकथा १७

१. उरगवर्ग १९

१. उरगसुत्तवर्णना २१

२. धनियसुत्तवर्णना ४२

३. खग्गविसाणसुत्तवर्णना ६१

४. कसिभारद्वाजसुत्तवर्णना १२५

५. चुन्दसुत्तवर्णना १४५

६. पराभवसुत्तवर्णना १५२

७. अग्गिकभारद्वाजसुत्तवर्णना १६०

८. मेत्तसुत्तवर्णना १७९

९. हेमवतसुत्तवर्णना १९४

१०. आलवकसुत्तवर्णना २१४

११. विजयसुत्तवर्णना २३१

१२. मुनिसुत्तवर्णना २४२

शब्दानुक्रमणिका २५९

सुत्तनिपात अट्ठकथा भाग - 1

समर्पण

विपश्यना आचार्यप्रवर श्री सत्यनारायण गोयन्काजी को सादर

समर्पित

जिन्होंने मुझे बुद्ध के व्यावहारिक दर्शन और पालि साहित्य

के मर्म को समझने की दृष्टि दी।

– अंगराज चौधरी

प्रकाशकीय

लगभग १६०० वर्ष पूर्व बुद्धघोस द्वारा लिखित सुत्तनिपात अट्ठकथा, जिसे परमत्थजोतिका भी कहते हैं, का आज तक हिंदी में अनुवाद नहीं हुआ है। प्रो० अंगराज चौधरी ने सर्वप्रथम इसका हिंदी में अनुवाद किया है। विपश्यनाचार्य पूज्य गोयन्काजी से जो दृष्टि इन्होंने पायी है उसी के आलोक में यह अनुवाद कार्य संपन्न हुआ है। जगह-जगह पर इस पुस्तक में साधना संबंधी बहुत-सी गंभीर बातें हैं जो आजकल सुबोध नहीं हैं। फिर भी विपश्यना का अभ्यास करनेवाले इसे बहुत दूर तक समझ सकते हैं– इसमें संदेह नहीं है।

पू० गोयन्काजी तीन भिक्षुओं द्वारा किये गये त्रिपिटक के अनुवाद से परिचित थे, इसलिए उनकी बड़ी इच्छा थी कि यदि अट्ठकथाओं का हिंदी में अनुवाद हो जाय तो हिंदी भाषा तो समृद्ध होगी ही, बहुत से पाठक जो पालि नहीं समझते हैं इसे पढ़कर लाभान्वित होंगे।

उन्हें यह भी पता था कि त्रिपिटक का हिंदी अनुवाद भी विपश्यना के दृष्टिकोण से न होने पर शतप्रतिशत ठीक नहीं है। इसे ही देखने के लिए उन्होंने प्रो० अंगराज चौधरी को अंगुत्तर निकाय का भदंत कौसल्यायन द्वारा किये अनुवाद को आधार बनाकर जहां-जहां विपश्यना का उल्लेख आता है, सुधारने कहा था ।

प्रो० अंगराज चौधरी ने सुत्तनिपात अट्ठकथा भाग-१ का हिंदी अनुवाद आज से लगभग १५ वर्ष पहले कर दिया था। अब उसको इन्होंने पुनः सुधार कर छापने योग्य बनाया है।

विपश्यना विशोधन विन्यास से अट्ठकथा साहित्य की हिंदी में छपनेवाली पुस्तकों में यह प्रथम पुस्तक है।

विपश्यना विशोधन विन्यास इस प्रथम पुष्प को पाठकों को समर्पित करता है और मंगल कामना करता है कि उन्हें इसका पूरा लाभ मिले।

विपश्यना विशोधन विन्यास

भूमिका

सुत्तनिपात अट्ठकथा, जैसा नाम से ही स्पष्ट है, सुत्तनिपात की अट्ठकथा है। सुत्तनिपात खुद्दकनिकाय का एक ग्रंथ है। बुद्धघोस ने सुत्तनिपात अट्ठकथा को परमत्थजोतिका भी कहा है जिसका अर्थ होता है परमार्थ की व्याख्या करनेवाली या उस पर प्रकाश डालनेवाली। कैसे मनुष्य का परम कल्याण हो सकता है– इस पर यहां प्रभूत प्रकाश डाला गया है।

आचार्य बुद्धघोस का जन्म बोधगया में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वे इतने व्युत्पन्नमति के थे कि बाल्यावस्था में ही वे तीनों वेदों में पारंगत हो गये। वे जगह-जगह घूमकर वाद-विवाद करते रहे। ज्ञान प्राप्त करने की उत्कट इच्छा थी। जब वे बौद्ध स्थविर भिक्षु रेवत से मिले तो उन्हें पता चला कि वे सचमुच कितने पानी में हैं। भिक्षु रेवत के मुख से बुद्धशासन के बारे में सुनकर उन्हें विश्वास हो गया कि यही एक मार्ग संसार से मुक्ति पाने का है। उन्होंने प्रव्रज्या ली और तीनों पिटकों का गहन अध्ययन किया। उनकी प्रतिभा देखकर भिक्षु रेवत ने उन्हें लंका जाकर तिपिटक की अट्ठकथा लाने की बात कही। वे लंका गये, अनुराधपुर महाविहार में ठहरे और उन्होंने सिंहली में पायी जानेवाली अट्ठकथाओं का अनुवाद पालि में करने की इच्छा प्रकट की। वहां के थेरों ने उनकी बुद्धि की परीक्षा ली। विसुद्धिमग्गो (विशुद्धिमार्ग) लिखकर वे कसौटी पर खरे उतरे और उन्होंने दीघ, मज्झिम, संयुत्त, अंगुत्तर निकाय की ही अट्ठकथाएं नहीं लिखीं बल्कि खुद्दकनिकाय की कुछ और पुस्तकों की भी अट्ठकथाएं लिखीं। सुत्तनिपात अट्ठकथा उनमें से एक है।

लेकिन अट्ठकथाओं का अनुवाद करने के पहले उन्होंने जो विसुद्धिमग्ग नामक पुस्तक लिखी वह सर्वतोभावेन परिपूर्ण है। यह बुद्धघोस का magnum opus है। इसे देखकर यह कहना उचित नहीं लगता कि बुद्धघोस ने सिंहली अट्ठकथाओं का सिर्फ अनुवाद किया। अब तो वे अट्ठकथाएं उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि बुद्धघोस ने उन अट्ठकथाओं का ही पालि में अनुवाद किया।

मेरा पक्का मानना है कि भले ही बुद्धघोस ने उन अट्ठकथाओं को पढ़ा होगा लेकिन अट्ठकथा लिखते समय उनका उपयोग उन्होंने अपने ढंग से किया और उनकी अट्ठकथाएं उनके आकाश की तरह विस्तृत पांडित्य और समुद्र की गहराई की तरह भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान पर प्रकाश डालती हैं। वे सिर्फ अनुवादक नहीं थे अपनी नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा से एक ऐसी अट्ठकथा के लेखक थे जो अपने-आप में बेजोड़ है, अप्रतिम है, अतुलनीय है।